

ॐ ॐ ॐ

# प्रार्थना व गायत्री

उपदेष्टा

ब्रह्मीभूत

श्री १०८ श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज

संस्थापक:-

श्री भगद्धमक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी ।

प्रकाशक व मुद्रक:-

भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस, रेवाड़ी" ।

सन् १९६५]

प्रति १०००

[सम्बत २०२२

## मनुष्य मात्र के लिये साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे ।
२. उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रखे ।
३. एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे ।
४. साधु सज्जन का सत्संग करे ।
५. विषयों के आधीन न हो ।
६. शत्रुओं को मित्र बनावे ।
७. अधिक उपाधि न बढ़ावे ।
८. निरन्तर सारासार का विचार करता रहे ।
९. भूतमात्र पर दया रखे ।
१०. अहंनिश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रखे ।



पौ यज्जाग्रतो दूरमुदेति  
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज  
सङ्कल्पमस्तु । १॥

जो धृतिमान् प्रक  
का दूर से दूर चला जा  
का इसी प्रकार से आ  
पुरुष का फिर आगमन  
भो ज्योति है वह मेरा म  
श्रीं येन कर्माण्यपसो म  
विदधेपु श्रीराः । यदपूर्व  
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

कर्माणुष्ठान में तत्त्व  
जल में जिस मन से उत्तम  
प्राणो मात्र के मात्र में स्थित  
पूजनीय भाव से स्थित है व  
मान हो ।

श्रीं यत्प्रज्ञानमुत्तम चेतो धृ  
प्रजासु । यस्मान्न ऋते कि  
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥

## साधारण नियम

है कि सद्गुरु की  
कृपा सम्पादन कर  
ती सेवा करे।

दृढ़ विश्वास रखे।

रण करे।

।

कर करता रहे।

करके उन पर वृ

## ❀ प्रार्थना ❀

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदेति देवं तद्दु सुप्तस्य तथैवेति ।  
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिव-  
सङ्कल्पमस्तु । १॥

जो द्युतिमान् प्रकाश स्वरूप देव जागते पुरुष  
का दूर से दूर चला जाता है और सोते हुये पुरुष  
का इसी प्रकार से आता व जाता है, जो सुषुप्त  
पुरुष का फिर आगमन करता है, जो ज्योतियों का  
भी ज्योति है वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वान् हो।

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृष्वन्ति  
विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे  
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

कर्मानुष्ठान में तत्पर बुद्धि सम्पन्न मेधावी  
यज्ञ में जिस मन से उत्तम कर्मों को करते हैं, जो  
प्राणो मात्र के गात्र में स्थित है, जो सब से प्रथम  
पूजनीय भाव से स्थित है वह मेरा मन शुद्ध संकल्प  
वान् हो।

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं  
प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे  
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥



जो प्रज्ञान, चित्त और धैर्य स्वरूप है, जो प्राणी मात्र का अन्तर आत्म स्वरूप अविनाशी ज्योति है। जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं होता वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।  
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्प-  
मस्तु ॥४॥

जिस अविनाशी मन ने यह सब भूत, वर्तमान और भविष्यत् को ग्रहण किया है। जिस के द्वारा सात होता यज्ञ का विस्तार करते हैं। वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता  
रथनाभाविवाराः । यस्मिश्चित्तं सवमोतं प्रजानां  
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥

जिस में ऋक्, साम यजु इस प्रकार स्थित हैं जिस प्रकार रथ को नाभि में अरे, जिस में प्राणी मात्र का ज्ञान, पट में तन्तु सम अ्रोत प्रोत है। वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्तेनीयतेऽभीशुभि-  
र्वाजिन इव । हृतप्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः  
शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

जैसे अच्छा सारथी लगाया जाता है। वैसे ही जो मनुष्यों को कदापि जीर्ण नहीं होता पराशरों से भी अधिक वेगवान शुद्ध संकल्पवान हो।

भूमिः स्वः तत्सवि-  
तस्य धीमहि धियो यो नः

हे सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप, स्वरूप सुखस्वरूप, अनन्त अथवा उत्पन्न करने वाले, उपासनीय, करने वाले, दिव्य स्वरूप परमात्म ध्यान करते हैं। वह परमात्मा त्वं, श्रयं, काम और मोक्ष में प्रेरणार्थक प्रदान करे।

यतेनः सवितुर्देवस्य वरेण  
ततोऽस्माकं बुद्धोः श्रेयस्करे

सब अगत को उत्पन्न करने का तो उपसनीय तेज है उस का है। वह उपसनीय तेज हमारी काम और मोक्ष में लगावे।

त और धैर्य स्वरूप है, जो  
र आत्म स्वरूप अविनाश  
ता कोई भी कर्म नहीं हाता  
पवान हो ।

व्यत्परिगृहीतममृतेन् सर्वम्  
ता तन्मे मनः शिवसङ्कल्प-

न ने यह सब भूत, वर्तमान  
ग किया है । जिस के द्वारा  
स्तार करते हैं । वह मेरा

यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता  
मश्चित्तं०सर्वमोतं प्रजानां  
स्तु ॥५॥

यजू इस प्रकार स्थित है  
भि में अरे, जिस में प्राणी  
न्तु सम ओत प्रोत है । वह  
न हो ।

मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभि-  
यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः

जैसे अच्छा सारथी लगाम द्वारा घोड़ों को  
चलाता है । वैसे ही जो मनुष्यों को प्रेरणा करता  
है । जो कदापि जीर्ण नहीं होता और जो वेगवान  
पदार्थों से भी अधिक वेगवान है । वह मेरा मन  
शुद्ध संकल्पवान हो ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो  
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

हे सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप, चैतन्य और ज्ञान  
स्वरूप सुखस्वरूप, अनन्त अपार, सब जगत् को  
उत्पन्न करने वाले, उपासनीय, सब पापों को नाश  
करने वाले, दिव्य स्वरूप परमात्मन् हम सब आपका  
ध्यान करते हैं । वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को  
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करे और शुद्ध  
बुद्धि प्रदान करे ।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे ।  
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

सब जगत् को उत्पन्न करने वाले सविता देव  
का जो उपसनीय तेज है उस का हम भजन करते  
हैं । वह उपसनीय तेज हमारी बुद्धियों को धर्मार्थ  
काम और मोक्ष में लगावे ।

है तेज पुञ्ज ज्योतिःस्वरूप परमात्मन् ! ज्ञान और आनन्द के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले ! सबका संहार करने वाले ! सबकी रक्षा करने वाले ! सबको प्रेरणा करने वाले ! अनन्त अपार आनन्द स्वरूप ज्ञान स्वरूप परमात्मन् हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐस ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों। जिस से आनन्दपूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवादपूर्वक हमारा आपको अनन्त बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

ओं शम्

दीहा ओं निरंजन  
सत्य पुरुष

ओम् निरंजन रं

प्रच्युत गुरु गोति

एक अखण्ड

मैं मैं, मैं प

एक आत्मा

प्रोत प्रोत सब

हरि नारायण

कृष्णानन्ताऽचलह

विनवो तुम के

तदन गणपति



दोहा ओं निरंजनं दुख भजनं रंकार ओंकार ।  
सत्य पुष्प सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥

ओ३म् निरंजन रंकार प्रभु  
सोऽहं सत्य नाम करतार ।

अच्युत गुरु गोविन्द दातार  
परमानन्द रूप निरधार ॥१॥

एक अखण्ड ज्ञान भण्डार  
तुमरी ज्योति का उजियार ।

मैं मैं, मैं पन सर्वाधार  
नेति नेति कर वेद उचार ॥२॥

एक आत्मा अपरम्पार  
शंकर ब्रह्म सर्व का सार ।

ओत प्रोत सब मैं निरंकार  
जीवन प्राण आप ओंकार ॥३॥

हरि नारायण अग्नि तार  
देव देव मैं करहूँ पुकार ।

कृष्णानन्ताऽचलहं गौड़  
हूँ फट अत्ला सर्व पसार ॥४॥

बिनवो तुम को बारम्बार  
प्रीतम प्यार करो उद्धार ।

तदन गणपति नैनमभार  
होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥५॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ।  
 ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।  
 योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं ।  
 श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

आनन्द स्वरूप, आनन्द के दाता, सुख स्वरूप, ज्ञान रूप, स्व स्वरूप ज्ञाता, महायोगियों के द्वारा सेव्य, संसार रोग के चिकित्सक ऐसे गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ।

परं पराणां परमं पवित्रं परेशमीशं सुरलोकनाथम् ।  
 सुरासुरैरचितपादपद्मं सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥

परे से परे अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त सूक्ष्म, सब के स्वामी, देवताओं के स्वामी, स्वर्ग लोक के स्वामी, राक्षस और देवताओं से पूजित ऐसे जिन के चरण कमल हैं उस आदि सनातन लोक गुरु को प्रणाम करता हूँ ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।  
 त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।  
 त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।  
 त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हे प्रभो ! तू ही मेरी माता, तू ही मेरा पिता  
 तू ही मेरा बान्धव, तू ही मेरा मित्र तू ही मेरा  
 ज्ञान है, तू ही मेरा धन है । हे देवों के देव ! तू ही  
 मेरा सब कुछ है ।

स्वराज्यसाम्राज्यं  
 भवत्कृपा  
 प्राप्ता मया श्र  
 नमो

लोक और पर  
 सम्पदायें आप की कृ  
 मैंने प्राप्त करली  
 गुरुदेव को मैं पुनः

ब्रह्मानन्दं परम  
 द्वन्द्वातीतं गगनस  
 एकं नित्यं विम  
 भावातीत त्रिगुण

ब्रह्म के आनन्द  
 सुख के देने वाले,  
 मानापमान आदि द्व

निर्मल और व्याप्त  
 राक्षों के द्वारा ज  
 नित्य है, निर्मल है,  
 बुद्धि रूप से साक्षी  
 सतो गुण, रजोगुण,  
 है । ऐसे श्री गुरु को



प्रसन्नं ।  
जबोधरूपम् ।  
भवरोगवेद्यं ।  
नमामि ॥

के दाता, सुख स्वरूप,  
महायोगियों के द्वारा  
सक ऐसे गुरुदेव को मैं

मीशं सुरलोकनाथम् ।  
लोकगुरुं नमामि ॥

अत्यन्त सूक्ष्म, सब  
स्वर्ग लोकके स्वामी  
ऐसे जिन के चरण  
लोक गुरु को प्रणाम

ता त्वमेव ।

ता त्वमेव ।

ता त्वमेव ।

देव देव ॥

ता, तू ही मेरा पिता

मित्र तू ही मेरा

देवों के देव ! तू ही

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा

भवत्कृपा श्रीमहिम प्रसादात् ।

प्राप्ता मया श्रीगुरुवेमहात्मने

नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु ।

लोक और परलोक की विभूतियां और सम्पूर्ण  
सम्पदायें आप की कृपा और महिमा से हे गुरुदेव !  
मैंने प्राप्त करली हैं । इन विभूतियों के दाता  
गुरुदेव को मैं पुनः अनन्तवार नमस्कार करता हूँ ।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधोसाक्षीभूतम्

भावातीत त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ब्रह्म के आनन्द को अनुभव करानेवाले, परम  
सुख के देने वाले, केवल ज्ञान स्वरूप, सुख दुःख  
मानापमान आदि द्वन्द्वों से रहित, आकाश सदृश  
निमल और व्याप्त, 'तत्त्वमसि' वह तू है आदि  
वाक्यों के द्वारा जानने योग्य गुरुदेव ! तू एक है,  
नित्य है, निर्मल है, अचल है, सब के हृदय में  
बुद्धि रूप से साक्षी रूप व्याप्त है, भावों से दूर  
सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनों गुणों से रहित  
है । ऐसे श्री गुरु को प्रणाम करता हूँ ।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप  
 ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योति स्वरूप ॥  
 अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप  
 सुखात्मा विद्वात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ॥  
 भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप  
 ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च ।

नमः शंकराय च मयस्कराय च ।

नमः शिवाय च शिवतराय च ।

कल्याण करने वाले, कल्याण स्वरूप, मंगल  
 के देने वाले, मंगल स्वरूप, शान्ति देने वाले,  
 शान्ति स्वरूप, ऐसे शिव को तथा शिव से इतर सब  
 देवों को अनन्तवार नमस्कार है ।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ॐ शान्तिः पृथिवी शान्ति-  
 रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्ति-  
 त्रिवेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्वं ॐ शान्तिः  
 शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ओं शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

हे भगवन् ! सूर्यादिलोक हम सब को सुख-  
 दायक हों । आकाश, पृथिवी, जल, ओषधि,  
 वनस्पति व संसार के सब विद्वान्, ब्रह्मा, वेद, यह  
 सब हम को सब काल में सुखदायक हों ।

योगुहं परमानन्दं  
 पश्य सान्निध्यमात्र

उन आनन्द स  
 ही समीपता को प्र  
 स्वरूप को प्राप्त क  
 गुरुब्रह्मा गुरुवि  
 गुरुः साक्षात्परब्र

गुरु ही ब्रह्मा  
 ब्रह्मा महादेव स्व  
 है। ऐसे गुरु को मैं  
 प्रज्ञान तिमिरा  
 चक्षुःरुन्मोलितं

गुरु अज्ञान स  
 स नेत्रों के अन्दर  
 ज्ञान के चक्षु खोल  
 हैं ।

यत्सत्येन जगत्स  
 यदानन्देन नन्दं

जिसकी स  
 होता है, जिसके स  
 और दीप्त है.

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।  
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥१॥

उन आनन्द स्वरूप श्री परमानन्द को जिस  
की समीपता को प्राप्त करके यह जीवात्मा चैतन्य  
स्वरूप को प्राप्त करता है मैं नमस्कार करता हूँ ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।  
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

गुरु ही ब्रह्मा गुरु ही विष्णु, गुरु ही सब से  
बड़ा महादेव स्वरूप है, गुरु ही साक्षात् परब्रह्म  
है । ऐसे गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ ।

अज्ञान तिमिरान्वस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।  
चक्षुर्हन्मोलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

गुरु अज्ञान रूपी अन्धेरे को ज्ञान रूपी सलाई  
स नेत्रों के अन्दर ज्ञानको ज्योति जगाता है और  
ज्ञान के चक्षु खोलता है ऐसे गुरु को प्रणाम करता  
हूँ ।

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत् ।  
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥

जिसकी सत्यता से संसार सच्चा मालूम  
होता है, जिसके प्रकाश से सारा संसार प्रकाशित  
और दीप्त है, जिस के आनन्द से सारे प्राणी



आनन्दित होते हैं उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ ।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।  
तत्पदं दक्षितं येन तस्मै श्चीगुरवे नमः ॥५॥

जिनका ज्योतिर्मय आकार कभी खण्डित नहीं होने वाला है, जो सारे चराचर में व्याप्त है, जिसने भगवान का परमपद दिखाया है उन गुरु देव को मैं नमस्कार करता हूँ ।



भूमुवः स्वः

देवस्य

नः प्रचोदय

सर्वव्यापक, सबकी

सत्तास्फूर्ति देने वाले

सर्व दुखों के ना

ज्ञान स्वरूप,

सुख स्वरूप, सब

अनन्त अपार पर

सर्वजगत् के

करने वाले, प

भजनीय, उ

तारीफ के

सर्व पापों के

तेव स्वरूप ज

देवस्य:-ज्ञान, आनन

विजय करा

गुण युक्त ऐ

हो नमस्कार करता

येन चराचरम् ।

गुरुवे नमः ॥१॥

र कभी खण्डित नहीं

राचर में व्याप्त है,

दिखाया है उन गुरु

ॐ भूर्भुवः स्वः ओं तत्सवितुर्वरेण्यं  
भर्गो देवस्य धीमहि धियो  
यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

ओं:—सर्वव्यापक, सबकी रक्षा करने वाले,

भू:—सत्तास्फूर्ति देने वाले, सत्य स्वरूप परमात्मा,

भुवः—सर्व दुखों के नाशक, चैतन्य स्वरूप और  
ज्ञान स्वरूप,

स्वः—सुख स्वरूप, सब को सुख देने वाले,

तत्:—अनन्त अपार पर ब्रह्म,

सवितुः—सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, प्रेरणा  
करने वाले, पवित्र करने वाले सविता देव,

वरेण्यम्:—भजनीय, उपासनीय वर्णन करने योग्य,  
तारीफ के लायक,

भर्गो:—सब पापों के भर्जन नाश करने वाले शुद्ध  
तेज स्वरूप ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा,

देवस्य:—ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले,  
विजय कराने वाले, दिव्य स्वरूप, पूर्वोक्त

गुण युक्त ऐसे आप परमात्मा का,

धीमहिः—हम ध्यान करते हैं हम तुम्हारी शरण होते हैं हम में हम पना आप हो हैं ।

यः—वह परमात्मा

नः—हमारी

धियः—बुद्धियों को

प्रचोदयात्—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे ।  
संसार से हटा कर अपने स्वरूप में  
लगावे और शुद्ध बुद्धि और प्रेम रूप  
भक्ति प्रदान करे ।

गायत्री मन्त्र सब मन्त्रों में बड़ा है । इस मन्त्र का स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मादि ऋषि मुनियों को उपदेश किया है । मनुष्य ऐसा कल्याणकारी मन्त्र अब तक नहीं बना सका है । इस मन्त्र में भगवान् के ओं, भूः, भुवः स्वः तत्, सवितुः वरेण्यम्, भर्गः, और देवस्य यह नौ नाम हैं । इन नौ नामों पर नौ श्लोक भी हैं । नौका में बैठकर जैसे नदी से पार होते हैं वैसे ही नौ नामों के जपने से संसार सागर को पार कर मुक्ति को प्राप्त होते हैं । नौ नामों में ही भगवान् की स्तुति इसलिये की गई है कि इन नौ नामों में भगवान् के अनन्त नाम आ जाते हैं क्योंकि गिनती नौ तक ही है । आगे तो एक पर ही शून्य

दिया जाता है

से आया है ।

ल, सायंकाल

प्रकार चार बार

समय सन्ध्या क

उन के घरों में चौ

क्योंकि यह कर्म अ

उस समय सन्ध्या

को भजन करके

आवेंगे और बहुत

है—सायमघीयानो

प्रातरघीयानो

सायंप्रातः

निशोथ तुरीय स

गायत्री व

दिनमें किये पाप

में जप करने व

नाश करता है ।

निष्पाप होता है

सिद्धि प्राप्त हो

गायत्री

मुख है, विश्वा

उपनयन, प्राण



हैं हम तुम्हारी बात  
हम पना आप हो है।

म, मोक्ष में प्रेरणा को  
टा कर अपने स्वयं  
बुद्ध बुद्धि और प्रेम को  
करे।

मन्त्रों में बड़ा है।  
ने ब्रह्मादि ऋषि मुनि  
नुष्य ऐसा कल्याणकार  
सका है। इस मन्त्र

स्वः तत्, सवि  
देवस्य यह नो  
लोक भी हैं। नोका  
पार होते है

संसार सागर को  
हैं। नो नामों में  
की गई है कि इन  
नाम आ जाते हैं  
गे तो एक पर हो

रख दिया जाता है। चारों वेदों में यह मन्त्र समान रूप से आया है। इस मन्त्र से प्रातः काल मन्वाह्न काल, सायंकाल और अर्द्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये, अर्द्ध रात्रि के समय सन्ध्या करने के लिये जब मनुष्य उठेंगे तो उन के घरों में चोरा आदि कोई बुरे काम न होंगे क्योंकि यह कर्म आधी रात के लगभग ही होते हैं। उस समय सन्ध्या निमित्त जाग ही जायेगा। रात्रि को भजन करके जब सोयेंगे तब बहुत अच्छे स्वप्न आवेंगे और बहुत लाभ होगा। उपनिषद् में कहा है:—सायमधोयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥  
प्रातरधोयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥  
सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ॥  
निशीथ तुरीय सन्ध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति ॥

गायत्री का सायंकाल में जप करने वाला दिनमें किये पापों का नाश करता है। प्रातः काल में जप करने वाला रात्रि में किये हुवे पापों का नाश करता है। दोनों समय जप करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि में जप करने से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है। अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग (इस्ते-

माल) है। यह मन्त्र आदि मन्त्र है। भगवान् के भजन में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीन बात होनी चाहियें। यह ऐसा मन्त्र है कि इस एक ही मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीनों बातें हैं। औं भूर्भुवः स्व. आदि नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है 'धोमहि' में उपासना (ध्यान) है। 'धोमहि' से भगवान् का ध्यान इस प्रकार करे:- "योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि औं खं ब्रह्म" कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाश स्वरूप पुरुष है वह मैं हूँ। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है। इस से भगवान् से शुद्ध बुद्धि और परा भक्ति की प्रार्थना करे। इस मन्त्र में पांच अवसान हैं। 'ओ३म्' यहाँ पर प्रथम अवसान है 'भूर्भुवः स्वः' पर दूसरा, 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' पर तिसरा, 'भर्गो देवस्य धामहि' पर चौथा और 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यहाँ पर पांचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहर कर अर्थ का चिन्तन करता हुआ मन्त्र जपे

समस्त मुसलमानों का एक मन्त्र (कलमा) है। जिस जाति का एक मन्त्र नहीं है उसका संगठन नहीं हो सकता। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं कि 'समानो मन्त्रः' तुम्हारा मन्त्र समान अर्थात् एक हो। अतः सबका एक मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेद  
मयः सारस्तु गाय

चारों वेदों का  
वेदों का सार ग  
ऐसा मन्त्र है जो  
जो गायत्री को  
पारगामी भी क

'या स  
शास्त्रों में गाय  
'गायत्री प्रोच्यते

इसका नाम  
वाले को संसार स  
गायत्री वेदज  
गायव्यास्तु परं

यह मन्त्र  
वाला है। इस  
लोक में पवित्र

मनु भ  
त्रप यज्ञ दश  
में होट ही हि  
गुणा फल देता  
फिरता जिस

सारभूतास्तु वेदानां गृह्योपनिषदो मताः ।

ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तया ॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है । इसलिये गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो सबका एक मन्त्र हो सकता है । जो गायत्री को नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों नहीं हो सूद्र के समान है ।

‘या सन्ध्या सैव गायत्री’ ।

शास्त्रों में गायत्री को ही सन्ध्या कहा है ।

‘गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः ।

इसका नाम गायत्री इसलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है ।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।  
गायव्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

यह मन्त्र वेद की माता है, पाप नष्ट करने वाला है । इस मन्त्र के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और मन्त्र नहीं है ।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधि यज्ञ से ऋषयः दश गुणा फलदायक है, इस में भी जिस में होट ही हिलें शतगुणा और मार्तसिक सहस्र गुणा फल देता है । लेटा लेटा, बैठा बैठा, डोलता फिरता जिस भी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का



मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है। पुण्य ही पुण्य है। इस के जपने से सब कामना पूरी होती है और अन्त में स्वर्गधाम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। अथ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण का देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञानका प्रकाश होता है।

### गायत्री का माहात्म्य

इस मन्त्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान् के दर्शन होंगे, मोक्ष मिलेगी, कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी। पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगों को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय प्राप्त होगी, सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, ऋद्धि चाहने वाले को ऋद्धि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायेगा इस में सन्देह नहीं।

गणपति

श्रुला

परमानन्द

वाहि

वे अन्त

दोन द

भगतन

बं बं

हर हर

गौरी श

जयशिव

श्रुलख

ज्योति स्व

सत्यनाम

रंकार

नारायण

। इसके जपने में किसी  
है। पुण्य ही पुण्य है।  
ना पूरी होती है और  
की प्राप्ति होती है।  
न्व दिन में चार बार  
ने वाला है। वेद का  
है, इससे पाप नष्ट  
होता है।

हात्म्य

भक्ति पूर्वक जपेगा  
दर्शन होंगे, मोक्ष  
पों का नाश होगा,  
के इच्छुक को पुत्र,  
को निरोगता, विजय  
गी, सिद्धि चाहते  
ले को ऋद्धि, विद्या  
हने वाले को भक्ति  
र प्रेम का आश्रय  
में सन्देह नहीं।

## कीर्तन ध्वनि

गणपति दुर्गा रवि विष्णु शिव ॥

अलला अक्का अम्बा देवी ।

परमानन्द लहै तेरे सेवी ॥

वाहि गुरुजी वाही गुरुजी ,

वे अन्त वे परवाह गुरुजी ।

दीन दयाल कृपाल गुरुजी ,

भगतन के रखपाल गुरुजी ॥

बं बं बं महादेव सदाशिव ।

हर हर हर महादेव सदाशिव ॥

गौरी शंकर जयशिव जयशिव ।

जयशिव जयशिव जयशिव जयशिव ।

अलख अपार अनाम अगोचर ।

ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष हर ॥

सत्यनाम सोऽहं दुःख भञ्जन ।

रंकार ओंकार निरञ्जन ॥

नारायण चरणी नमो नमो नित ।

राधा रमण हरिगोविन्द जय जय ।  
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ॥

राधाकृष्ण भज कुञ्ज बिहारी ।  
मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥  
शंख चक्र पीताम्बर धारी ।  
करुणा सागर कृष्ण मुरारी ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।  
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

गौरी शंकर सीताराम ।  
राधे श्याम श्यामा श्यामा ॥

बोल हरि बोल हरि हरि बोल ।  
गोविन्द माधव मुकुन्द बोल ॥

राधे राधे गोविन्द बोलोरे ॥

गोपी प्रिय गोपीनाथ ।  
गोपी जन वल्लभ ॥

जय नारायण जय गोविन्द हरे ।

जय राधे जय राधे जय राधे ॥

श्रीकृष्ण चंत  
हरे कृष्ण हरे

नारायण  
श्रीं श्रीं

नित्यहि ब  
हरे कृष्ण

रघुपति  
पतित

जय रघुन  
जानकी

अच्युतं के  
कृष्ण दा

धीधर म  
जानकी

केशव  
घट घट

गोविन्द  
हर शि



जय जय ।  
 जय जय ॥  
 विहारी ।  
 धनधारी ॥  
 र धारी ।  
 मुरारी ॥  
 राम हरे हरे ।  
 कृष्ण हरे हरे ॥  
 सीताराम ।  
 श्यामा ॥  
 हरि बोल ।  
 द बोल ॥  
 बोलोरे ॥  
 गोपीनाथ ।  
 वल्लभ ॥  
 विन्द हरे ।  
 जय राघे ॥

श्रीकृष्ण चंतन्य प्रभु नित्यानन्द ।  
 हरे कृष्ण हरे राम राघे गोविन्द ॥  
 नारायण हरि ओं ओं ।  
 ओं ओं ओं ओं ओं ओं ॥  
 नित्यहि बोलो राघे श्याम ।  
 हरे कृष्णा हरे राम ॥  
 रघुपति राघव राजा राम ।  
 पतित पावन सीताराम ॥  
 जय रघुनन्दन जय सिया राम ।  
 जानकी वल्लभ सीता राम ॥  
 अच्युतं केशवं राम नारायणम् ।  
 कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥  
 श्रीधर माधव गोपिका वल्लभम् ।  
 जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ।  
 केशव कृष्ण गोविन्द मुकुन्द ।  
 घट घट व्यापक आनन्द कन्द ॥  
 गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे ।  
 हर शिव शंकर भव त्रिपुरारे ॥

## सहगान

परम पिता पूरण प्रभु, परमानन्द अपार ।  
 प्रेम स्वरूप पावन परम, ईश्वर सर्वाधार ॥  
 दीन दयालु दयानिधे, दाता परम उदार ।  
 सब देवन के देव हे, दुख दोषन से पार ।  
 शक्ति ज्ञान आनन्द के, हे पूर्ण भण्डार ।  
 सब से सुन्दर हे हरे, सब सारों के सार ॥  
 तेरी ऐसी हो दया हम में बढ़े मिलाप ।  
 संघ शक्ति का मान हो मिटे फूट का पाप ॥  
 मीठी माला मेल की, फेर हम दिन रात ।  
 जो जीवन से एक हों, तजे कलह की बात ॥  
 हम में आवे एकता, भ्रातृपन का भाव ।  
 दिन दिन बल शक्ति बढ़े, धरम करम में चाव ॥  
 हाथ जोड़ हो वन्दना, तुम को बारम्बार ।  
 भक्ति भाव से नम्र हों, मन में श्रद्धाधार ॥

श्री महाराज  
 रही है  
 विदानन्द की  
 ब्रह्माण्डों के  
 स्फूर्ति सब को दे  
 ब्रह्माण्डों  
 कमल में  
 मगा रही है  
 ससार  
 ही ज्योति  
 चन्द्र  
 ज्योति  
 ज्योति बिना  
 ज्योति  
 ब्रह्मास्मि  
 रहो है

गान

परमानन्द अपार ।  
ईश्वर सर्वाधार ॥  
दाता परम उदार ।  
दुख दोषन से पार ।  
हे पूर्ण भण्डार ।  
सब सारों के सार ॥  
म में बढ़े मिलाप ।  
मिटे फूट का पाप ॥  
रे हम दिन रात ।  
जे कलह की बात ॥  
मातृपन का भाव ।  
रम करम में चाव ॥  
को बारम्बार ।  
न में श्रद्धाधार ॥

## भारती

(श्री महाराज जी की अन्तिम वाणी)  
हरा रही है ज्योति चिदानन्द को ।  
चिदानन्द की परमानन्द की ॥  
कल ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर ।  
स्ता स्फूर्ति सब को दे रही है निजानन्द को ॥१॥  
ब ब्रह्माण्डों के बाहर भीतर ।  
हृदय कमल में सूर्य मण्डल में ॥  
जगमगा रही है ज्योति महानन्द को ॥२॥  
पह ससार असार है अन्तिम ।  
एक ही ज्योति है अखण्डानन्द की ॥३॥  
सूर्य चन्द्र विद्युत और तारे ।  
प्रग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४॥  
ज्योति बिना कुछ और नहीं है ।  
अहं ज्योति है ज्ञान यही है ॥  
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति ।  
जग रहो है घट घट परमानन्द की ॥५॥



## आश्रम के उद्देश्य

- १-श्री भगवान को भक्ति का प्रचार करना .
  - २-गोरक्षा और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना ।
  - ३-जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना ।
  - ४-शिक्षा का प्रचार करना जिस में मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना ।
  - ५-बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।
  - ६-आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।
  - ७-सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना ।
  - ८- राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन । करना ।
-